Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 5 | MAY 2023

दर्शन एवं विज्ञान का अप्रतिम योग : गीता का सप्तमोध्याय का एक विवेचन

अमित, कुमार [1] | प्रो. आर. के. एस. अरोड़ा [2]

[1] शोधार्थी , शिक्षा शास्त्र, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर

[2] आचार्य, शिक्षा संकाय, भगवन्त विश्वविद्यालय, आजमेर

ABSTRACT:

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन का सिरमौर ग्रन्थ ह, जिसमे न केवल धार्मिक आचार–विचार उपस्थित है, बल्कि इसमें विज्ञान विषयक सम्पूर्ण जानकारी दी गई है।यह दर्शन एवं ज्ञान विज्ञान का अप्रतिम योग है। इसमें सप्तम अध्याय का नामकरण ही है ''ज्ञान विज्ञान योग''। इस अध्याय में कुल 30 श्लोक है। श्लोक 1 से लेकर 7 तक विज्ञान सहित ज्ञान का विषय दिया गया है। श्लोक 8 से लेकर 12 तक में सम्पूर्ण पदार्थो में कारण रूप से भगवान की व्यापकता बताई गई है। श्लोक 13 उसे लेकर 19 तक मे आसुरी स्वभाव वालो की निन्दा की गई है। साथ ही साथ भगवद् भक्तो की प्रशंसा की गई है। श्लोक 20 से 23 तक में अन्य देवताओं की उपासना का विषय दिया गया है। अन्त मे श्लोक 24 से 30 तक में भगवान के प्रभाव एवं स्वरूप को जानने वाली की महिमा और न जानने वालों की निन्दा की गई है। इस तरह सप्तमोध्याय का वर्णन का प्रारम्भ भक्ति से शुरू होता ह, एवं भक्ति की महिमा एवं आवश्यकता बतलाते हुए इस संसार का ज्ञान परा एवं अपरा को सम्पूर्णता के साथ बतलाना विज्ञान सहित है। सम्पूर्ण जगत सब परा–अपरा का योग है, बीज रूप है। अतः गीता का सप्तमोध्याय भारतीय ज्ञान विज्ञान का अप्रतिम योग है, जिसमे दर्शन का विज्ञान के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध प्रस्फुटित होता है।

KEYWORDS:

धार्मिक विचार, विज्ञान विषयक, स्वभाव, परा–अपरा योग, विज्ञान एवं दर्शन, भक्ति

प्रस्तावनाः–

द''ान, विज्ञान एंव धर्म में अन्योनाश्रित सम्बन्ध है। द''ान विज्ञान के सम्बन्धों की व्याख्या कई विद्वानों ने की है। प्लेटो ने कहा कि '' पदार्थो के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही द''ान है'' अरस्तू ने भी कहा है कि ''द''ान एक ऐसा विज्ञान है कि जो परमतत्व के यर्थाथ स्वरूप की जांच करता है '' फिक्टे ने बताया कि ''द''ान ज्ञान का विज्ञान है '' जो परमतत्व के यथार्थ स्वरूप की जांच करता है। '' फिक्टे ने बताया कि ''द''ान ज्ञान का विज्ञान है। (Philosophy is the science of knowledge) भारतीय विद्वान डा0 राधाकष्णन ने बड़ी संक्षिप्त रूप में महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट किया कि '' द''ान यथार्थता के स्वरूप का तार्किक ज्ञान है'' अस्तू, विद्वाना की उक्तियों से प्रकट होता है कि द''ान एंव विज्ञान दोनो मे निकटता का सम्बन्ध है। दोनो से इस सृष्टि के यथार्थता का स्वरुप निर्धारित होता है।

श्रीमद्भगवदगीता एक ऐसा अप्रितम ग्रन्थ है जिसमें ज्ञान–विज्ञान का विवरण उपस्थित होता है। इसमें योग या जोड़ या सम्बन्ध के रूप में एकाकार को दिया गया है। इसमें भी सप्तम् अध्याय में सृष्टि के सम्पूर्ण पदार्थो का यर्थाथ ज्ञान प्रद''ात किया गया है। जिसे ज्ञान विज्ञान योग का नाम दिया गया है। इससें द''ान, विज्ञान एंव धर्म तीनों मे सम्बन्ध प्रकाट हाता है। वस्तुतः द''ान विचारों मे है, सोच मे है, चिन्तन में है। विज्ञान पदार्थ की वास्तविक सत्ता का विवरण है और ये दोनो धर्म का विषय भी है। धर्म धारण करने की शक्ति है। यदि हम यह मानते है, कि अमक़ वस्तु विद्यमान है। तभी उस पर विचार प्रारम्भ करते है। अन्तः करण की वस्तु मन बुद्वि सहित विज्ञान सहित ज्ञान है। भारतीय द''ान मे परा–अपरा ज्ञान सब कुछ जानने को मिलता है। जो धर्म मीमांसा का भी विषय है। जब चेतन तत्व अपरा प्रकृति के साथ तादात्म्य कर लेता है। तब वह परा प्रकृति कहलाता है। अतः अपरा जगत् है। एंव परा जीव है। दोनो ही भगवान की प्रकृतिया या शक्तियाँ है। इस सम्पूर्ण जगत की यथार्थता का विवरण विज्ञान देता है जो श्रीमद्भगवद्गीता के सप्तमोध्याय का मूल विषय है। इसकी विवेचना द्वारा धर्म, द''ान एंव विज्ञान के सम्बन्धों की विवेचना करना मुख्य प्रतिपाद्य है।

विज्ञान सहित ज्ञान

श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय सात के द्वितीय श्लोक में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को विज्ञान सहित ज्ञान का ज्ञानार्जन कराया–

ज्ञानं तेअहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्य''ाषतः

यंज्ञात्वा नेह भूयोअन्यज्ज्ञातव्यमव''ाष्यते।।

अर्थात् परा (जीव) तथा अपरा (जगत) प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता नही है। यह ज्ञान का विषय है। परा और अपरा सब कुछ एक भगवान ही है। यह विज्ञान है। अतः जीव एंव जगत को स्वतन्त्र न मानकर एक दूसरे से गूथां हुआ मानना चाहिये। भगवान का समग्र रूप ही विज्ञान सहित ज्ञान है।

वस्तुतः हम मानव माया के जंजाल में जकड़े हुए होते है। हम सभी सांसारिक भोग विलास एंव संग्रह, मान–सम्मान का संग्रह करने मे लगे है। इतना ही नही सुन्दर चीज एंव अच्छी चीज की ओर आकर्षण होना स्वाभाविक चीज है। भले ही उस वस्तु का ज्ञान हों या न हो परन्तु उसमें आकर्षण से हम उसकी ओर प्रभावित होते है। जैसे सोने–चाँदी रूपये पैसे की ओर हम आकर्षित होते है। रूपये क्या है कैसे बने है। इसका ज्ञान नही चाहिये। बस अच्छी है हम लालायित हो उठते है।

श्रीमद्भगवतगीता मे जीव–जगत को परा–अपरा के सम्बन्धों के विज्ञान के रूप मे बताया गया है। परा–अपरा का संयोग ही सम्पूर्ण संसार का बीज रूप है। इसे इस प्रकार बताया गया है–

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृति विद्वि मे पराम

जीवभूतां महाबाहो ययेंद धार्यतें जगत्।।

एतद्योनीनि भूर्तान सर्वाणीत्युपधारय।

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।। (गीता 7,15, 7,16)

अर्थात् जब चेतन तत्व अपरा प्रकृति के अंहकार के साथ तादात्मयं कर लेता है तो वह परा प्रकृति कहलाता है। वस्तुतः पृथ्वी,जल तेज, वायु, आका''ा, ये सब पंचमहाभूत है तथा मन, बुद्वि एंव अहंकार को जोड़कर कुल आठ प्रकार की अपरा प्रकृति है। जीव रूपी परा एंव अपरा से यह जगत धारण किया जाता है। यहाँ गीता में अपरा (जगत्) और परा (जीव) दोनो को भगवान की प्रकृति जड़ होते हुए भी चेतन परमात्मा से भिन्न नही है। यह जगत् परमात्मा की दृष्टि मे नही है और न ही किसी महात्मा की दृष्टि मे है अपितु जीव की दृष्टि मे है। ऐसा मानने पर श्रीमद्भगवतगीता ऐसा महान ग्रन्थ बन गया है कि जो लोग मानते है कि इस संसार को परमात्मा ने बनाया है गलत है। अपितु यह जगत जीव की दृष्टि से है अर्थात् जीव एंव जीवन का रहना ही जगत की महत्ता है। जिस जगत या संसार में जीव न रहे वह निर्जीव जगत है उसमें क्या होता है हम नही जानते है। जीव ने जगत ही को सत्ता और महत्ता दिया है। जीव ने इस जगत के साथ अपना पन कर लिया है और जन्म–मरण रूप बन्धन में पड़ गया।

इस जगत में या ब्रह्माण्ड में स्थावर–जंगम, थलचर, जलचर,नभचर, जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्विभज, मनुष्य देवता, गन्धर्व, पितर, प''ाु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जितने भी प्राणी देखने, सुनने, पढने मे आते है, वे सब अपरा और परा का संयोग ही सम्पूर्ण संसार का ही बीज है।

श्रीमद्भगवतगीता के अवतारवाद की संकल्पना इसी जगत के कार्य–कारण प्रभाव से सम्बद्व है। ''अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा''। अर्थात मैं सम्पूर्ण जगत का प्रभव तथा प्रलय हूँ। मैं ही संसार को उत्पन्न करने वाला हूँ और मैं ही उत्पन्न होने वाला हूँ, मैं ही ना''ा करनेवाला हूँ और मैं ही नष्ट होने वाला हूँ,क्योकि मेरे सिवाय संसार का अन्य कोई भी कारण तथा कार्य नही है। मै ही इसका निमित्त और उपादान कारण हूँ। भगवान ही जगद्रूप से प्रकट हुए है। यह जगत् भगवान का आदि अवतार है। आदि अवतार होने से जगत् नही है, केवल भगवान ही है। इस प्रकार श्रीमद्भगवतगीता

का अवतारवाद विज्ञानवाद के कार्य–कारण सम्बन्धों की विवेचना करता है। गीता में केवल कार्य–कारण सम्बन्ध ही नही बल्कि कारणता का प्रभाव भी द"ार्या गया है। सम्पूर्ण जगत सूई धागों की तरह भगवान में ही पिरोया है।

सम्पूर्ण पदार्थ विज्ञान का दर्शनः–

श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय सात के श्लोक 8 से लेकर 12 तक सम्पूर्ण पदार्थ विज्ञान का द"ान किया गया है, जिसका कारण रूप भगवान है। भगवान सम्पूर्ण व्यापी है। घट–घट में है। गीता में है–

''रसोहमतप्सु कौन्तेय प्रभास्मि श"ासूर्ययोः

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः से पोरूष नृषु''

अर्थात सृष्टि की रचना में भगवान ही कर्ता होते है। भगवान ही कारण होते है और भगवान ही कार्य होते है। इस दृष्टि से सूर्य, चन्द्र आका"ा,वेद शब्द पुरूषत्व और मनुष्य सबके सब कारण तथा कार्य एक भगवान ही है। गन्ध, पृथ्वी, तेज, अग्नि, जीवन"ाक्ति, प्राणी, तप, तपस्वी, बीज, प्राणी, बुद्वि, बुद्विमान सभी का कारण– कार्य भगवान ही है। इतना ही नही गीता जब भी जिस युग में लिखी गयी उसमें अलग–अलग ब्रह्माण्ड का उल्लेख है और उसमें अलग–अलग प्रकार के जीवों का उल्लेख है। अध्याय 7 श्लोक 10 तथा अध्याय 9 श्लोक 18 में अनेक ब्रह्माण्ड एंव उनमें विभिन्न तरह के जीवों का उल्लेख अपने आप में वि"ाष्ट है। ब्रह्माण्ड के सभी जीवों का बीज रूप एक ही परमात्मा हैं एक ही परमात्मा से अनेक प्रकार के प्राणी उत्पन्न होते है। लेकिन बीज वृक्ष उत्पन्न करक स्वंय नष्ट हो जाता है पर अनन्त सृष्टियाँ उत्पन्न होने पर भी परमात्मा रूपी बीज ज्यों का त्यों रहता है। इस तरह सम्पूर्ण अखिल वि"व का नियामक एंव कर्ता परमात्मा है। जीवात्मा परमात्मा का अं"ा है।

निश्कर्शः–

श्रीमद्भगवदगीता वि"व का अप्रतिम ग्रन्थ है। जिसमें ज्ञान एंव विज्ञान का द"ान सप्तमोध्याय मे दिया गया है। इसमें भगवान के माध्यम से विज्ञान सहित ज्ञान का द"ान प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः विज्ञानसहित ज्ञान कहने का आ"ाय है भगवान के समग्र रूप का अनुभव करना। भगवान के विभाग रूप में बह्म निर्गुण निराकार रूप मे है। अखिल कर्म के नियन्ता के रूप में वही उत्पत्ति–स्थिति प्रलय आदि की सम्पूर्ण क्रिया का कर्ता एंव कारण है। यह ज्ञान का विभाग है। अर्थात् बह्म, सम्पूर्ण, अध्यात्म तथा अखिल कर्म को ही जानना ज्ञान कहलाता है। जो इसे जान जाय वही जरा–मरण से मुक्त हो जाते है। अधिभूत (शरीर सहित सम्पूर्ण पंचतत्व) अधिदैव (मन, इन्द्रिया के अधिष्ठात सभी देवता) अधियज्ञ (अन्तर्यामी भगवान) यह सब विज्ञान के विभाग है। इस दोनो विभागों को ही संयुक्त रूप से विज्ञान सहित ज्ञान कहा जाता है। जो भगवान के समग्र रूप का अनुभव है यह ज्ञानयोग, भक्तियोग एंव कर्मयोग के साधन से जरा–भरण के सांसरिक दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है।

REFERENCES

1. श्रीमद्भगवत गीता–(गीता प्रबोधनी, हिन्दी व्याख्या) स्वामी राम सुखदास, गीता प्रेस, गोरखपुर,संवत् 2075
2. महाभारत (भीष्म पर्व)– गीता प्रेस गोरखपुर
3. डॉ० राधाकृ'णन;(1989), भारतीय द"ान ,राजपाल एण्ड सन्स क"मीरी गेट, दिल्ली।
4. द्विवेदी, डॉ० कपिल देव,(2001), संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास आर०एल०ए०एल० पब्लिके"ान बुक डिपो, मेरठ।
5. पुरोहित, सोमेश्वर, (2002), अनाशक्तियोग (महात्मा गांधी द्वारा गुजराती में लिखित श्रीमद भगवद्गीता का हिन्दी रूपान्तर), नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद।
6. भावे, आचार्य विनोबा;(2003), गीता प्रवचन सर्व सेवा संघ प्रका"ान, राजघाट वाराणसी।
7. भावे, विनोवा, 2012 –विज्ञान युग में धर्म, सर्व सेवा संघ, वाराणसी,
8. शंकर भास्य गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. f"ाक्षांक अंक कल्याण, वर्ष 1988 गीता प्रेस गोरखपुर।
10. ओड, एल0के0 (2016); शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
11. पाण्डेय, राजबली (1988); हिन्दू धर्म कोश, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
12. अल्तेकर, अनंत सदाशिव (2014); प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी।
13. उपनिषद भाष्य (2017 ई०)– (भाष्यकार, संपादक) आचार्य राजवीर शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली,